Course : **B.Ed., Part-II**

Paper : **XVI (सामाजिक विज्ञान का अध्ययन)**

(Pedagogy of Social Science)

Prepared by : **Dr. Pallavi**

Topic : **अर्थशास्त्र का अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र**

(Meaning, Nature and Scope of Economics)

1. प्रस्तावना (Introduction)

प्रस्तुत पाठ को पढ़कर छात्रगण अर्थशास्त्र के विषय में विस्तृत ज्ञान दिया गया है। अर्थशास्त्र सामाजिक तथ्यों तथा घटाओं का तर्क पूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ये घटनाएँ धन प्राप्त करने एवं धन का प्रयोग करने वाली मानवीय क्रियाओं से संबंधित होती हैं। यह विषय मानव व्यवहार, मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि से संबंधित है। वस्तुतत: यह धन से संबंधित कार्यो की व्याख्या करता है। अर्थ या धन ही मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग किया जाता है। उपयोग तथा उपभोग को आर्थिक क्रियाओं का आदि एवं अंत कहा जाता है, क्योंकि आवश्यकता ही समस्त आर्थिक क्रियाओं की जननी है। अर्थशास्त्र इन्हीं क्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रस्तुत अध्ययन में छात्रगण अर्थशास्त्र का इतिहास जानने के साथ-साथ अर्थशास्त्र का अर्थ, क्षेत्र एवं प्रकृति को जान समझ पाएगें।

2. अर्थशास्त्र का इतिहास (History of Economics) :

अर्थशास्त्र की उत्पत्ति 'ग्रीस' में मानी जाती है; ऐसा **प्लेटो** एवं **अरस्तु** के लेखों से प्रमाणित होता है। अर्थशास्त्र का पर्यायवाची शब्द 'इकोनोमिक्स' है, ग्रीक शब्द 'Oikos' से बना है। जिसका अर्थ 'घरेलु व्यवस्था' (House hold Manegement) होता है। ग्रीक लेखकों के ग्रंथों में स्थान-स्थान पर 'घरेलु व्यवस्था' से संबंधित वित्तीय प्रबंध एवं बैंकिक प्रणाली पर आधारित विचार मिलते है।। सरल आर्थिक संगठन के सिद्धांत के अंतर्गत दास एवं मालिक, विदेशी व्यापार तथा बैंक की कार्य प्रणाली पर चर्चा पाई जाती हैं। मध्य युग में व्यक्तिगत उद्धार (Individual Salvation) के प्रयास मानव की प्रबल आदर्श विचारधारा बनी। इस क्रम में व्यक्तिगत सम्पत्ति की रक्षा की गई एवं ऊँचे ब्याज दरों पर धन उधार देना (Usury) अधिकांश यूरोपिय देशों में अपराध की श्रेणी में रखा गया। इस प्रकार सुधार की प्रक्रिया ने व्यापार को पर्याप्त बढ़ावा दिया। समाज का यह रूख आने वाले वर्षो में व्यापार एवं बैंकिग का बहुत अधिक विकास हुआ। आर्थिक प्रश्नों एवं समस्याओं ने आर्थिक विचारों को जन्म दिया। जल्द ही आर्थिक विचारकों की एक नई धारा विकसित हो गई। यह आंदोलन व्यापारिक आंदोलन के एकदम बाद में आयी, जब व्यापारिक मार्ग भूमध्य सागर से विश्व के बड़े-बड़े राष्ट्र अस्तित्व में आने लगे। यह नई विचारधारा वणिकवाद (Mercantilism) के नाम से जानी जाती है। यह राष्ट्रीय आर्थिक विचारधारा थी जिसका उद्देश्य पुराने संसार (Old World) के राष्ट्रों के कोषों को सोने-चाँदी से भर देना था, जिससे उनके राष्ट्र सशक्त एवं आत्मनिर्भर बन सकें। 'वणिकवाद' का दो शताब्दियों से अधिक तक राष्ट्रों के जीवन में बोलबाला रहा। प्रत्येक राष्ट्र आयात की अपेक्षा वस्तुओं का निर्यात अधिक करना चाहता था, जिससे व्यापार संतुलन बना रहे तथा भुगतान बहुमूल्य धातुओं में हो। प्रत्येक राष्ट्र सोने तथा चाँदी को अपनी सीमाओं में रखना चाहता था। अत: बहुत बार राज्यों का विस्तार तथा युद्ध का कारण भी बना। इन बातों को ध्यान में रखते हुए यूरोपिय देशों को नियंत्रित जल यातायात एवं टैरिफ (Tarrif) के लिए कानून बनाने के लिए मजबूत होना पड़ा था।

अठारवीं शताब्दी तक अर्थशास्त्र एक पृथक् ज्ञान को शाखा के रूप में विकसित नहीं हुआ था। इस विषय के अध्ययन की प्रेरणा प्रकृतिवादी (Physiocrartes) द्वारा दी गई, जिसके प्रमुख प्रणेता विद्वन फ्रांस के **कैने (Quesney)**, **टॅरगोट (Targot)** एवं अन्य थे। इस विचार धारा को निर्बाध (Physiocracy) कहलाती है। इसके अंतर्गत यह विश्वास किया जाता है कि सभी आर्थिक संबंध प्राकृतिक नियमों 9Natural Laws) द्वारा नियंत्रित होते हैं। इस विचार को मानने वालों ने 'वणिकवाद' का विरोध किया तथा एकाकी कर प्रणाली का प्रतिपादन किया। वे प्राकृतिक नियमो तथा हस्तक्षेप रहित स्वतंत्रता (Laissez Faire) के कट्टर समर्थक थे। इस युग में 'स्वतंत्र प्रतियोगिता' एवं 'स्वतंत्र मजदूर' की धारणा प्रबल रही। इस समय उद्योग आश्चर्यजनक रूप से विकसित हुए, लेकिन कार्यशील वर्ग (Working Class) का क्रूरतापूर्वक दोहन किया गया। इस औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप आर्थिक संबंधों में सरकारी नियंत्रण के अभाव में अत्याचार एवं समस्याएँ उठ खड़ी हुई, उसके लिए अठारहवी शताब्दी के अंत में सुधार की माँग बढ़ने लगी। इस विचारधारा के लोग किसानों, खनिकों व मछुआरो ंको ही उत्पादक वर्ग में रखते थे।

अर्थशास्त्र के जनक अंग्रेजी अर्थशास्त्री **एडम स्मिथ (Adam Smith)** ने प्रकृतिवादियों की इस विचारधारा में सुधार किया। उनकी चर्चित पुस्तक 'वैल्थ ऑफ नेशन्स' (Wealth of Nations) सन् 1776 में प्रकाशित हुई, जिसका उस काल के आर्थिक विचार धारा पर बहुत प्रभाव है। इस विचारधारा को **माल्थस, रिकार्डो, मिल** तथा अन्य आर्थशास्त्रियों ने आगे बढ़ाया और सरकारी नियंत्रण एवं प्रतियोगिता के लाभों को समन्वित किया। **एडम स्मिथ** ने अर्थशास्त्र को 'धन का विज्ञान' (Science of Wealth) कहा। उन्होंने धन को राष्ट्र की शक्ति माना।

उन्नीसवीं शताब्दी में अर्थशस्त्रियों का ध्यान मानव कल्याण की ओर गया। परिणामस्वरूप आर्थिक विचारध ारा में क्रांतिकारी परिवर्त्तन आया। **कार्ल मार्क्स (Karl Marks)** एवं अन्य अर्थशास्त्रियों ने इस दिशा में आंदोलन चलाया। **मार्शल** नामक अर्थशास्त्री ने अर्थशास्त्र को 'मानवीय कल्याण का शास्त्र' कहा। उनके अनुसार, अर्थशास्त्र का उद्देश्य मानवीय भौतिक कल्याण में वृद्धि करना है।

बीसवीं शताब्दी में इसी विचारधारा को **प्रो० रॉबिन्स** द्वारा बढ़ाया गया, जिसमें 'दुर्लभ साधनों द्वारा अधिकतम मानव कल्याण' को आर्थिक सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित किया गया।

इस प्रकार, हमने देश कि अर्थशास्त्र का एक विषय के रूप में जन्म कब एवं कैसे हुआ ? अब हम अर्थशास्त्र के अर्थ को जानेगें।

3. अर्थशास्त्र का अर्थ (Meaning of Economics) :

अर्थशास्त्र के अंतर्गत आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। हमारे आस-पास के अधिकतर मनुष्य किसी-न-किसी व्यावसाय जैसे-कृषि, उद्योग, व्यापार, उत्पादन में लगे हैं क्योंकि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अर्जित धन के माध्यम से करता है। धन की पूर्ति मानव अनेक आर्थिक क्रियाओं के माध्यम से करता है। वस्तुत: आर्थिक क्रियाएं वे क्रियाएँ हैं, जो मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में सहायक होती है। इन्हीं आर्थिक क्रियाकलापों की विवेचना अर्थशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है। ये आर्थिक कार्यकलाप लोगों के उन कार्यकलाप से जुड़े होते हैं, जो यह निर्धारित करते हैं कि देश में किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाएगा। परिवहन, भंडारण, विपणन, बैंकिग और बीमा जैसी सेवाएँ किस प्रकार प्रदान की जाएगी। अर्थशास्त्र के अंतर्गत यह भी निर्णय लिया जाता है कि उत्पादित वस्तुओं की अब कितनी खपत होगी और भविष्य के लिए कितना बचाकर रखा जाएगा। इन सारी बातों की समझ अर्थशास्त्र विषय के अंतर्गत आती है। इन आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादक और उपभोक्ता व्यक्ति, फर्म (कंपनियाँ), निजी संस्थाएँ और सरकार होती है। सरकार न केवल इन वस्तुओं और सेवाओं की उत्पादक है, बल्कि अपने नियमों तथा विनियमों के माध्यम से ढाँचे पर नियंत्रण भी रखती है। **एडम स्मिथ** जो अर्थशास्त्र के जनक कहलाते हैं, उन्होने अर्थशास्त्र को 'धन का विज्ञान' (Science of Wealth) कहा।

अर्थशास्त्र एक सामाजिक विषय है। यह समाज में रहने वाले व्यक्तियो की कतिपय क्रियाओं का अध्ययन करता है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार की क्रियायें करता है, जिसमें कुछ धार्मिक, कुछ राजनीतिक, कुछ सामाजिक होती है। कुछ क्रियाएँ व्यक्तिगत तथा कुछ क्रियाएँ धन एवं व्यावसाय से संबंधित होती है तो कुछ क्रियाएँ परोपकार एवं मनोरंजन से संबंधित होती है।

मनुष्य के आर्थिक क्रिया कलापों के अंतर्गत दो तथ्यों का अध्ययन किया जाता हैं– आर्थिक प्रयत्न (Economic Activities) तथा आर्थिक प्रयोजन (Economic Motives) । जिन कार्यो के पीछे आर्थिक प्रयोजन होता है, वैसे कार्य आर्थिक प्रयत्न कहलाते हैं और आर्थिक प्रयत्नों का मूल उद्देश्य आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है ।

किसी देश का नागरिक, उस देश की अर्थव्यवस्था में पाई जाने वाली वस्तुओं तथा सेवाओं का उपयोग एवं उपभोग करता है । यह सब उक्त देश के प्राकृतिक संसाधन, मानव-संसाधन आदि पर निर्भर करता है । मानव संसाधन के अंतर्गत शिक्षा, प्रशिक्षण, कौशल इत्यादि आता है । इन कार्यो को मूर्त्त रूप देने के क्रम में देश की परिवहन प्रणाली, जिसे आर्थिक बुनियादी ढाँचा भी कहा जाता है । देश की परिवहन प्रणाली के अंतर्गत सड़के, रेल मार्ग, वायु मार्ग, समुद्र मार्ग वगैरह आती है । इसके साथ-साथ बैंको, बीमा कंपनियों और अन्य संबंधित इकाईयों तथा संस्थाओं का जाल है जो सीधे वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण में योगदान करते हैं । उपरोक्त सभी इकाईयाँ किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के प्रमुख घटक है । इन्हें आर्थिक बुनियादी ढांचा कहा जताा है ।

इन आर्थिक बुनियादी ढांचों के निर्माण हेतु शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान की आवश्यकता होती है । किसी देश का मानव संसाधन जितना सशक्त होता है उसका असर देश की अर्थव्यवस्था में दिखता है । प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा विश्वविद्यालय शिक्षा देश की मानव संसाधन को कुशलता प्रदान करने में अपना अहम योगदान देता है । अत: सभी प्रकार की संस्थाओं की स्थापना तथा अपेक्षित मानवशक्ति निर्मित करना उस देश की जिम्मेवारी है । हाल के वर्षो में प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण, माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर व्यावसायिक कौशल विकसित करना एवं उच्च शिक्षा के प्रसार पर भी बल दिया जा रहा है । आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा के स्तर को नियंत्रित किया जाए तथा उच्च शिक्षा प्रदान करते वक्त इस बात का ध्यान रखे कि यह शिक्षा उन्हें ही प्रदान किया जाए, जो इसके योग्य हो । इस बात का भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि इसके गुणवत्ता यानि बेहतर प्रशिक्षण, अनुसंधान के बेहतर मानदंडों तथा बेहतर संगठन की जरूरत होती है । अत: उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए इसमें निवेश करना आवश्यक है और अर्थव्यवस्था में इसकी प्रासंगिकता के लिए जरूरी है ।

4. अर्थशास्त्र का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of Economics) :

अर्थशास्त्र अध्यापन का आधुनिक समय में बहुत महत्व है । यह विद्यार्थियों को आर्थिक जीवन के आधारभूत सिद्धांतों, नियमों एवं विचारो तथा तथ्यों का ज्ञान प्रदान करने में सहायक होता है । यह जीवन में आने वाली आर्थिक समस्याओं का सामना करने की समझ एवं क्षमता प्राप्त करता है ।

अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को उनके चारों ओर के आर्थिक वातावरण से समायोजित होने की क्षमता प्रदान करता है ।

यह विद्यार्थियों में आर्थिक सुनागरिकता के लिए प्रशिक्षित करता है ।

यह विद्यार्थियों में समाज, राष्ट्र एवं विश्व की समस्याओं, को समझने का अवसर विकसित करता है । इससे उनका दृष्टिकोण व्यापक होता है तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करता है ।

अर्थशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में विवेक शक्ति, चिंतन-शक्ति, तर्क शक्ति, स्मरण-शक्ति, निर्णय-शक्ति आदि मानसिक शक्तियों का विकास होता है ।

आर्थिक समस्याओं के हल करने की क्षमता विकसित होती है । समाज सुधारको के एवं राजनीतिज्ञों को इसके अध्ययन से जन समस्याओं को समझने तथा उसका हल निकालने की समझ विकसित होती है । यह विद्यार्थियों को व्यवसाय के चयन में भी सहायता प्रदान करता है । विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में भी सहायता मिलती है ।

5. अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics) :

अर्थशास्त्र की प्रकृति विज्ञान तथा कला दोनों की है । यह एक आदर्शात्मक विज्ञान है । अर्थशास्त्र हमारे समक्ष ऐसे अनेक आदर्श प्रस्तुत करता है, जहाँ गणित के बिना अर्थशास्त्र पूरा हो ही नहीं सकता है । वही कला के रूप में इन आदर्शो को प्राप्त करने हेतु अर्थशास्त्र बड़ी मात्रा में मानव कल्याण करता है ।

जहाँ अर्थशास्त्र निगम प्रणाली के प्रयोग द्वारा हमे सत्यों से अवगत कराता है, वहीं दूसरी ओर आगमन प्रणाली द्वारा विभिन्न आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण एवं संश्लेषण करता है। इस विधि से कार्य कारण का संबंध (Causal Relationship) स्थापित होता है। इन स्थापित संबंधों द्वारा सामान्य नियमों का विरूपण किया जाता है।

आर्थिक समस्याओं के समाधानार्थ हमें विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों से संबंधित आर्थिक आँकड़े एकत्रित करने पड़ते हैं। उनका वर्गीकरण, विश्लेषण तथा व्याख्या करनी पड़ती है। इस कार्य हेतु विज्ञान तथा कला दोनों विषयों से सहायता लेनी होती है। अर्थशास्त्र मनुष्य को अनेकों आर्थिक समस्याओं से अवगत कराता है। इससे हमारे दृष्टिकोण में व्यापकता आती है। हम प्रत्येक आर्थिक समस्या को उनके सही रूप में देखने में समर्थ होते हैं।

अर्थशास्त्र निगमन प्रणाली के द्वारा अर्थशास्त्र अनेक आर्थिक सत्यों (Truths) की खोज करता है। इन खोजो के आधार पर हमें मनुष्य एवं समाज की सम्पत्ति की यथार्थता का ज्ञान होता है।

अर्थशास्त्र की प्रकृति सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों के महत्व है। विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **प्रो0 पीयू (Prof. Pigou)** ने कहा है कि, अर्थशास्त्र का महत्व मानसिक व्यायाम करना या सत्य का ही केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है, वरन् यह नीतिशास्त्र का दास और व्यवहार का सेवक है। According to Pigou, "Economic Science is chiefly valuable neither as an intellectual gymnastic nor even as a means of winning truth for its own sake, but as a hand maid of Ethics and a servant of practice" अर्थशास्त्र का व्यवहारिकता इसे विज्ञान के साथ-साथ कला भी है। इस शास्त्र के अध्ययन से उपभोक्ता, उत्पादक, व्यापारी, समाज सुधारक, विद्यार्थी एवं श्रमिक अपने दैनिक जीवन में लाभ उठा सकते है।

6. अर्थशास्त्र का क्षेत्र (scope of Economics) :

अर्थशास्त्र के व्यापारिक तथा सैद्धांतिक महत्व को देखते हुए इसे पाठयक्रम में उपयुक्त स्थान दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा आयेाग ने माध्यमिक शिक्षा के लिए जो पाठ्यक्रम प्रस्तावित किया, उसमें अर्थशास्त्र का एक स्वतंत्र विषय के शिक्षण के रूप में कक्षा 9 से अर्थशास्त्र शिक्षण की व्यवस्था की गई है। कक्षा 9 में अर्थशास्त्र ऐच्छिक विषय के रूप में सम्मिलित है। उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र को एक पृथक् वैकल्पिक विषय का स्थान प्राप्त है।

शिक्षा आयेाग के शब्दों में, ''अच्छी नागरिकता और भावात्मक एकीकरण के विकास के लिए भारत में सामाजिक अध्ययन का प्रभाव कार्यक्रम अत्यावश्यक है। सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम का संगठन अनेक प्रकार से किया जा सकता है और संतुलित विद्यालय पाठ्यक्रम में समेलित दृष्टिकोण, जो कि इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र तथा नागरिक शास्त्र द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान और कौशल को एक साथ रखने का प्रयास करता है।''

अर्थात् भारतीय विद्यालीय शिक्षण-व्यवस्था के पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र को एक वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान प्राप्त है। अतः हम कह सकते हैं कि भारतीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र को एक वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान दिया गया है।

वर्तमान परिस्थितियों में अर्थशास्त्र-शिक्षण का बहुत महत्व है। इसके महत्व का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार से है, **जे0एच0 डॉड (J.H.Dodd)** के अनुसार,

1. वह औद्योगिक सभ्यता को समझने में सहायता प्रदान करता है।
2. उद्योग एवं व्यवसाय के संगठन में सहायता प्रदान करता है।
3. यह व्यक्ति को धन का सदुपयोग करना सिखाता है।
4. यह छात्रों को वैयक्कि तथा पारिवारिक वित्तीय मामलों की व्यवस्था करना सिखाता है।
5. अर्थशास्त्र-शिक्षण व्यवसाय या पेशे के चयन में सहायता प्रदान करता है।

अर्थशास्त्र शिक्षण के महत्व को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है-

(अ) सैद्धांतिक महत्व,

(ब) व्यावहारिक महत्व,

1. विभिन्न तथ्यों के सापेक्षिक महत्व को समझने की शक्ति छात्रों में विकसित करना।
2. विविध जटिलताओं का निराकरण करने की क्षमताओं का विकास करना
3. अर्थशास्त्र शिक्षण से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञानवर्द्धन होता है।
4. छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास होता है।
5. व्यापक दृष्टिकोण का विकास होता है।

7. अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise) :

1. अर्थशास्त्र का अर्थ क्या है ? इसका इतिहास बताएँ।
   What is the meaning of Economics ? Explain its History.
2. अर्थशास्त्र का अर्थ बताएँ। इसके महत्व को समझाएँ।
   Explain the meaning of Economics. Discribe its importance.
3. अर्थशास्त्र की अवधारणा क्या है ? इसकी प्रकृति को बताएँ।
   What is concept of Economics ? Discribe its Nature.
4. अर्थशास्त्र का अर्थ बताएँ। इसका क्षेत्र बताएँ।
   Describe the meaning of Economics. Explain its scope.

❐ ❐ ❐